पेज - ① निकलक पटेल (हिन्दी विभाग)
B.A - I वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर
दिनांक - 28.05.2020

घनानंद - सवैयों के भावार्थ

प्रस्तुत पद में नायिका कहती है कि है, सुजान, मैंने पहले ही प्रेम की एक रेखा खींच दी है, उसके अतिरिक्त दूसरी रेखा खींच नहीं सकती।

लेकिन आपने न जाने कैसी पढ़ी पढ़ी है, कैसी शिक्षा पायी है कि मुझसे तो आप मन भर प्रेम पा लेते हैं, पर अपनी ओर से एक छटांक भी नहीं देते।

जिन आँखिन रूप ...
... सिख लों विष पागनि है।

श्रीकृष्ण के वियोग में नायिका कहती है कि जिन नेत्रों

पेज - (2)

से एक दिन मुझे कृष्ण के रूप का परिचय मिला था, उन नेत्रों को तो अब सदैव जागते हुए ही सोना है अर्थात उनके लिए सोना और जागना एक बराबर हो गया है।

जिस हृदय में उनके वियोग की पीड़ा समा गयी है उसका मन कहीं और कैसे लग सकता है।

हे सुजान, अब तो यह हृदय सदा दुख से दग्ध है। आपके मुखचन्द्र को देखे बिना इस शरीर में नख से शिख तक विष व्याप्त हो गया है।

7) पर कारजहि देह ....

मो अँसुवानहि लै बरसौ।

वियोगिनी नायिका कहती है कि

पेज -③

हे बादल, तुम तो दूसरों के लिए शरीर धारण करते हो। संसार में सबकी मनोकामना को पूर्ण करने के लिए ही विचरण करते रहते हो। अमृत के समान जल की निधि सभी पर अत्यन्त उदारता के साथ लुटा कर विश्व में सज्जनता के साथ घूमते रहते हो। तुम्हारा उद्देश्य संसार का कल्याण करना है। वे कहती है कि तुम सभी को जीवन देने वाले हो, कुछ मेरी पीड़ा को भी अपने हृदय में महसूस करके देखो और उस पीड़ा को दूर करने का कृपा करो। हे मेघराज, कभी उस विश्वास-घाती कृष्ण के आँगन में मेरे आँसुओं को लेकर बरस जाओ।